प्राककथन

शोध मानव की सहज जिज्ञासा से उतपन्न होकर जीवन के नए-नए क्षेत्रों, अनुभवों के माध्यम से सत्य का उदाहरण करता है। इस दृष्टि से जहां शोध में किन्हीं पूर्व उपलब्ध सत्यों की पुनर्वर्णना अनिवार्य होती है। वहीं जीवन के विविध पक्षों और संदर्भों में अजिंत ज्ञान विज्ञान को केंद्र में रखकर शोध के नए क्षेत्र समय संदर्भ में सामने आते हैं।

हिंदी कथा साहित्य में सैद्धांतिक मनोविज्ञान का प्रवेश प्रभुत्व युग के उत्तरार्ध में आया। इस विषय पर पहला शोध कार्य डॉ. देवराज उपाध्याय का ‘आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में मनोविज्ञान’ (1956) है। इस शोध कार्य के द्वारा हिंदी में मनोवैज्ञानिक शोध संबंधी दो ब्राह्मणों का प्रवेश हुआ, जिनसे आज का शोधकर्ता भी आक्रांत है। पहली ब्राह्मण-मनोविश्लेषण ही मनोविज्ञान है- से पाठ, लेख, विद्वान आलोचक, प्राध्यापक और शोधकर्ता प्रायः सभी प्रभावित हैं। दूसरी ब्राह्मण शोध पद्धति से संबंधित हैं- विवेचन कृति के विश्लेषण द्वारा समपुर्ख आने वाले सिद्धांतों की अपेक्षा सिद्धांत की व्याख्या करते हुए साहित्य को उद्धरित करने का आरंभ उठाने किया। मनोविज्ञान एक शाखा के रूप में और साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में मनोविश्लेषण के रूप में अपेक्षाकृत अधिक भिन्नता लिए होता है।

आधुनिक युग में मनोविज्ञान ने जीवन के न केवल बाह्य और व्यक्त फलनों को प्रभावित किया है, बल्कि मानव के समग्र व्यक्तित्व, अस्तित्व और कार्य कलाप का वह नियन्त्रण, यूगठायर तथा संवादात्मक शास्त्र बन गया है। साहित्य का जीवन से प्रत्यक्ष संबंध होने के कारण मनोविज्ञान की भूमिका को अनुभूति, संघटन और फलतः उसके विश्लेषण की दृष्टि से सहज ही आंका जा सकता है।

मनोविश्लेषण का आधार रचयिता कलाकार की अनुभूति का श्रोत वह
सामाजिक मनुष्य है जिसकी क्रिया प्रतिक्रिया, व्यक्ति और अव्यक्ति, रचनात्मक और विघटनात्मक, आनुवांशिक, ऐतिहासिक और समकालीन सत्रों पर सामान्य से लेकर विशेष, व्यक्ति से लेकर सामूहिक स्तर तक कुंजाओं और यौन कुंजाओं से लेकर मनोविशेषताओं के विविध रूपों में होती है। साहित्य के लिए यह व्यक्ति एक सम्रामण व्यक्ति है, एक सचेतन व्यक्ति है जिसका ध्यान न केवल उसे बल्कि उसके चतुर्दिक वातावरण को भी प्रभावित करता है। इसलिए मनोविज्ञान विषय के साहित्यिक शोध में मनोविश्लेषणात्मक अपेक्षाएं ही वे अपेक्षाएं होती हैं जिनके आधार पर मनोविज्ञान साहित्य से सुजन और तदन्तर समालोचना के स्तर पर जुड़ता है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन जीते जागते पात्रों को केंद्र में रखकर ही इस विषय प्रयास में आगे बढ़ गया है। वास्तव में घटनाएं या परिवेश और मानव मन, इनके द्वारा और फिर मानव के अन्तर्दृष्टि से कहीं घटनाएं मानव को प्रभावित करती हैं, तो कहीं मानवीय प्रक्रियाएं घटनाओं को जन्म देकर परिवेश को प्रभावित करती हैं। अब दो शब्द प्रस्तुत शोध प्रबंध के विषय में कहनी।

प्रथम प्रकरण में मनोविज्ञान के सिद्धांत और विश्लेषण मनोविज्ञान अर्थ परिभाषा एवं स्वरूप, भारतीय मनोविज्ञान का संक्षिप्त परिचय, भारतीय मनोविज्ञान की सामान्य विशेषताएं, पाठ्यालय मनोविज्ञान सामान्य परिचय, मनोविज्ञान का क्षेत्र मनोविज्ञान की शाखाएं, आधुनिक मनोविज्ञान की परिभाषा स्वरूप विवेचन, मनोविश्लेषणवाद एवं व्यक्तिवादी मनोविज्ञान के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी देने का प्रयास किया है।

दूसरे अध्याय में साहित्य, मनोविज्ञान : सिद्धांत निरूपण के अंतर्गत आधुनिक मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण जिसके अंतर्गत मनोविज्ञान स्वरूप विवेचन भारतीय मनोविज्ञान पाठ्यालय मनोविज्ञान तथा मनोविज्ञान का क्षेत्र और शाखाएं। आधुनिक मनोविज्ञान परिभाषा, स्वरूप एवं विभिन्न समन्दर, मनोविश्लेषणवादी मनोविज्ञान के
अंतर्गत फ्रायड का मनोविश्लेषणवाद, वैज्ञानिक मनोविज्ञान, मनोविश्लेषणात्मक मनोविज्ञान को समन्वित किया है।

तीसरे अध्याय में- स्वतंत्रता से पहले उपन्यासों में बाल मन और स्वतंत्र्योत्तर उपन्यासों में बाल-मन की अभिव्यक्ति। बाल-मन से संबंधित कई उपन्यासों का जिक्र है जैसे - बालिका की मूल्य निर्माण की प्रक्रिया को आधार बनाकर लिखा गया, हिंदी का पहला उपन्यास यशपाल का ‘अमिता’ बाल्य जीवन के उपन्यासों में यह एक भिन्न कोटि का उपन्यास है।

कृष्ण बलदेव वैद का ‘उसका बचपन’ निम्न मध्य वर्ग के बालक से संबंधित उपन्यास भिक्षु के उपन्यास ‘दुर्गा’ का नाम से सन् 1960 में हुआ। इसके अतिरिक्त ‘झरोखे’ भीष्म साहनी, ‘आंगन में एक वृक्ष’, ‘दुश्यंत कुमार, अमृत राय का ‘सुख-दुख’ ‘कहियाँ’ , मनु भंडारी ‘आपका भाटी’, सुरजमुखी अंधेरे के’, कृष्णा सोवती, निर्मल वर्मा ‘लाल ठीन की छत’ मृदुला गर्ग का ‘वंशज’ गोविंद मिश्र ‘लाल पैली जमीन’, रमेशचंद्र शाह का ‘गोवर गणेश’, ‘आकाश की छत’, मृदुला गर्ग का ‘अनित्य’, भीमसेन त्यागी का ‘काला मुलाब’ इसके अतिरिक्त प्रेमचंद कालीन स्वतंत्रता से पूर्व उपन्यासों का जिक्र।

चौथे अध्याय में स्वतंत्रता से पूर्व हिंदी कहानियों में बाल मन और स्वतंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में बाल मन की अभिव्यक्ति। प्रेमचंद व अन्य लेखकों की कहानियों के सम्भावना द्वारा इसे तैयार करने का प्रयास किया है।

पांचवें अध्याय में सीमाएं और संभावनाओं को तलाशा गया है और अंत में उपसंहार
इस विषय पर शोध प्रबंध लिखने की प्रेरणा मुझे स्नातकोत्तर हिंदी विभाग की प्राध्यापिका डॉ. नगमा जावेद जी से मिली। मैं सही दिल से उनकी सदा आभारी रहूंगी जिन्होंने मुझे यह मौका दिया और मेरा हर कदम पर मार्गदर्शन किया है।

इस अवसर पर डॉ. माधुरी छड़ा, अध्यक्ष एवं प्रो. हिंदी विभाग और महामान में वे डाइरेक्टर के पद पर हैं और अपनी जिम्मेदारियों को भरती भावित निभा रही हैं उन्हें कैसे भुला सकती हूँ? क्योंकि मेरे शोध प्रबंध विषय को चुनने वाले उन्होंने अपना सहयोग देकर मुझे प्रेरित किया इसलिए मैं माधुरी मैडम के प्रति अपना आभार प्रकट करती हूँ।

मेरे शब्दों में इतना सामर्थ्य नहीं कि मैं अपने हृदय की भावनाओं को उनमें साकार कर सकूं और यूं भी श्रद्धा भाव को किसी भी सांसारिक, भौतिक तराजू पर तोला भी कैसे जा सकता है? शब्दों के सीमित दायरे में उसे बांधना सामग्रो ही कहां है? यह तो एक शब्दातील आलोक है जिससे एकहास के नेत्र ही देख सकते हैं। जिसका संगीत हृदय के स्पंदन में ही सुनाई देता है। इसलिए मौन की असीमता का सहारा लेकर ही मैं अपनी श्रद्धा के सुमन परम पुजयनीय मैडम नगमा के चरणों में अपनित करते हुए शत्स - शत्स नतमस्तक हूँ।

मैं बान्सी हाई स्कूल एंड जूनियर कॉलेज पनवेल में हिंदी शिक्षिका के रूप में पिछले नौ वर्षों से कार्यरत हूँ। इस व्यक्तित्व के दौरान भी मेरा यही प्रयास रहा है कि जो मेरे विद्यालय की जिम्मेदारी है, और मेरे परिवार में मेरे बच्चों के प्रति है उसे पूरी मेहनत, लगन, ईमानदारी और पूरी निष्ठा के साथ समय का ख्याल रखते हुए मैंने सदैव पूरा किया है। मेरे परिवार के सदस्यों में पहला नाम आता है मेरे पति स्वदेश कुमार का जिन्होंने हमेशा मुझे भावनात्मक रूप से प्रोत्साहित किया है। हालांकि नौकरी के सिलसिले में वे ज्यादातर शहर के बाहर ही रहते हैं लेकिन हमेशा उन्होंने मेरी भावनाओं की कड़ किया और उसे समझा में उनकी आभारी हूं क्योंकि यदि उन्होंने
मुझे प्रोत्साहित नहीं किया होता तो शायद समस्त न होता। मेरे परिवार से सबसे ज्यादा योगदान मेरे दो बेटों का है डाॅ बेटा अंशुल जो कि इस वर्ष 12 वीं की परीक्षा दे रहा है और छोटा बेटा मेहेल वह भी इस वर्ष 10वीं बोर्ड परीक्षा दे रहा है। इस व्यस्तता के दौरान में कभी-कभी मेरे बच्चों को भी समय असमय स्थितियों को लेकर समझौता करना पड़ा किंतु फिर भी मेरे बच्चों ने मेरा साथ दिया।

मैं एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय के सभी सदस्यों की आभारी हूँ जिन्होंने समय समय पर मुझे पुस्तकें उपलब्ध करवाया। मैं सबसे अधिक शुक्रगुजार हूँ पारिदृश्य प्रकाशन की क्योंकि उन्होंने लगभग तीन वर्षों तक मेरी जरूरत के मुताबिक मुझे पुस्तकें मिलाकर मेरी मदद की खासकर मोदी जी को मेरी ओर से धन्यवाद देती हैं। अतः मैं प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग देने वाले सभी गुरुजनों व अन्य लोगों के प्रति पुन: आभार प्रकट करती हूँ, क्योंकि निराशा के छोरों में मेरा मनोबल बढ़ाकर इन्होंने मुझे प्रोत्साहित करते हुए पूर्ण रूप से सहायता भी की है।

नगरमा मैडम के अच्छे स्वभाव स्नेहमयी प्रेरणा एवं मदुर प्रोत्साहन ने मुझे जो कुछ दिया है, वह सदैव स्मरणीय रहेगा जो वर्णनात्मक है अनुभव से परे हैं। हृदय की तमामतर गहराइयों के साथ मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि हूँ।

इस शोध के साथ न्याय करने में मैंने अपने सामाध्य भर कोई कसर नहीं उठा रखी हैं लेकिन फिर भी मेरी तुषियों के लिए मुझे क्षमा याचना का अधिकार भी हो यही फिर आपसे उपेक्षा रहेगी।

धन्यवाद ।

शोधकर्त्री
श्रीमती सीमा श्रीवास्तव
एम.ए. बी.एड।

V